

नेक बनने का नुस्खा

इस्लामी भाइयों
के लिये

पन्द्रहवीं सदी की अजीम इल्मी व रूहानी शख्सियत
शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बनिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी دائم برکاتہم العالیہ

ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के
तरीकों पर मुश्तमिल शरीअतो तरीक़त का जामेअ मज्मूआ

72 म-दनी इन्आमात

72 Madani In-aamaaT (Hindi)

ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं । इन के
मुताबिक़ आसानी से अमल करने का तरीक़ए कार
आख़िर में दिया गया है । मज़ीद मा'लूमात के लिये
मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से किताब

जन्नत के तलब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता तलब फ़रमा सकते हैं ।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी) مکتبۃ الدینۃ
दा'वते इस्लामी

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
ان شاء الله عز وجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! हम पर इल्म व हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना व
बकीअ व मग़िफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(72 म-दनी इन्आमात)

येह रिसाला (72 म-दनी इन्आमात)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान
में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब
दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह
कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ फ़रमा कर
सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

म-दनी वज़ाहतें

म-दनी इन्आमात की वज़ाहतों और रिआयतों से मु-तअल्लिक सुवालात के जवाबात के लिये तन्ज़ीमी तौर पर चार क़ाइदे मुकर्रर किये गए हैं।

क़ाइदा नम्बर 1 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात चन्द "जुज़्इय्यात" पर मुश्तमिल हैं।

म-सलन : तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त, अव्वाबीन वाला म-दनी इन्आम, इस म-दनी इन्आम में 4 जुज़ हैं, लिहाज़ा ऐसे म-दनी इन्आमात पर अक्सर पर अमल होने की सूरत में तन्ज़ीमी तौर पर अमल मान लिया जाएगा।

(अक्सर से मुराद आधे से ज़ियादा म-सलन 100 में से 51 अक्सर कहलाएगा)

क़ाइदा नम्बर 2 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात ऐसे हैं जिन पर किसी दिन अमल न होने की सूरत में तन्ज़ीमी तौर पर दूसरे दिन अमल की तरगीब है।

म-सलन : चार सफ़हात फ़ैज़ाने सुन्नत, 313 बार दुरूदे पाक पढ़ने या कन्जुल ईमान शरीफ़ से कम अज़ कम 3 आयात की तिलावत (मअ तरजमा व तफ़्सीर) करने से महरूम रही। इस सूरत में जितने दिन नागा हुवा, बा 'द वाले दिनों में रह जाने वाले दिनों का

हि़साब लगा कर उतनी ही मर्तबा अमल करने पर तन्ज़ीमी तौर पर अमल मान लिया जाएगा ।

काइदा नम्बर 3 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात ऐसे हैं जिन पर अमल की आदत बनाने में वक़्त लगता है ।

म-सलन : कहकहा, तू तुकार से बचने और निगाहें झुका कर चलने की आदत बनाने वाले इन्आमात, ऐसे म-दनी इन्आमात पर ज़मानए कोशिश के दौरान अमल मान लिया जाएगा ।
(कोशिश पाए जाने के लिये ज़रूरी है कि कम अज़ कम दिन में 3 दफ़आ अमल करे)

काइदा नम्बर 4 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात ऐसे हैं जिन पर सहीह़ उज़्र (या'नी हकीकी मजबूरी) की बिना पर अमल की कोई सूरत न हो या इस दौरान दूसरे म-दनी काम में मशगूलिय्यत है ।

म-सलन : जिम्मेदार वगैरा दीगर म-दनी कामों में मस्रूफ़िय्यत के बाइस किसी म-दनी इन्आम म-सलन : मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान में शरीक न हो सके या वालिदैन की वफ़ात या उन की दूसरे शहर रिहाइश की सूरत में दस्त बोसी और अनपढ़ होने के बाइस लिख कर बात करने से महरूमि है तो भी तन्ज़ीमी तौर पर इन पर अमल मान लिया जाएगा ।

यौमिया 50 म-दनी इन्आमात

पहला द-रजा 17 म-दनी इन्आमात

- (1) क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निव्यतें कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरगीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (2) क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा फ़रमाई ? नीज़ हर बार किसी एक को अपने साथ मस्जिद ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (3) क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख़्लास और तस्बीहे फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पढ़ी ? नीज़ रात में सू-रतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (4) क्या आज आप ने बातचीत, चलत फिरत, उठाना रखना, फ़ोन पर गुफ़्त-गू, स्कूटर कार चलाना वगैरा तमाम कामकाज मौकूफ़ कर के अज़ान व इक़ामत का जवाब दिया ?
(अगर पहले से खा पी रहे हों और अज़ान शुरू हो जाए तो खाना पीना जारी रख सकते हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(5) क्या आज आप ने अपने श-जरे के कुछ न कुछ अवराद और कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिये ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(6) क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस, ट्रेन वगैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुए राह में खड़े या बैठे हुए मुसल्मानों को सलाम किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(7) आज आप ने (घर में और बाहर भी) हर छोटे बड़े हत्ता कि वालिदा (और अगर हैं तो अपने बच्चों और उन की अम्मी) को भी तू कह कर मुख़ातब किया या आप कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ़्त-गू हैं कह कर बात की या जी कह कर ? (आप कहना, जी कहना दुरुस्त जवाब है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(8) **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** के मा'ना हैं "अल्लाह ने चाहा तो ।" और अह़ादीस में इस के बोलने की तरगीब है, क्या आप ने पक्के इरादे के साथ हर जाइज़ बात पर निय्यत करते वक़्त **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** के पाकीज़ा जुम्ले बोले कि नहीं ? और किसी की तरफ़ से तबीअत मा'लूम करने पर शिक्वा करने की बजाए **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ** (या'नी हर हाल में अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र है), और किसी ने'मत को देख कर **مَا شَاءَ اللَّهُ** (या'नी जो अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की मरज़ी) कहा ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(9) क्या आज आप ने सलाम का जवाब और छींकने वाले के اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहने पर फ़ौरन इतनी आवाज़ से जवाबन الله يَرْحَمُكَ कहा कि दोनों ने सुन लिया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(10) क्या आज आप ने दौरान गुफ्त-गू कुछ न कुछ दा'वते इस्लामी की इस्ति'लाहात इस्ति'माल फ़रमाई ? नीज़ तलफ़फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(11) क्या आज आप ने सुन्नत के मुताबिक़ बैठ कर मअ़ पर्दे में पर्दा, खाने पीने के दौरान मिट्टी के बरतन इस्ति'माल फ़रमाए ? नीज़ पेट का कुफ़ले मदीना लगाने (या'नी भूक से कम खाने) की कोशिश फ़रमाई ? (ज़हे नसीब ! रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट पेट पर पथ्थर बांधने की सआदत नसीब हो जाए)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(12) क्या आज आप ने फ़ैज़ाने सुन्नत से दो दर्स (मस्जिद, घर, दुकान, बाज़ार वग़ैरा जहां सहूलत हो) दिये या सुने ? (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(13) क्या आज आप ने मद्र-सतुल मदीना (बालिगान) में पढ़ा या पढ़ाया ? नीज़ मस्जिदे महल्ला की इशा की जमाअत के वक़्त से दो घन्टे के अन्दर अन्दर घर पहुंच गए ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(14) क्या आज आप ने 12 मिनट मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किसी इस्लाही किताब और फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार कम अज़ कम चार सफ़हात (दर्स के इलावा) पढ़ या सुन लिये ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(15) क्या आज आप ने यक्सूई के साथ कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुहा-सबा) करते हुए जिन जिन म-दनी इन्आमात पर अमल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(16) क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से क़ब्ल) सलातुत्तौबा पढ़ कर दिन भर के बल्कि साबिका होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ खुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ौरन तौबा कर के आयन्दा वोह गुनाह न करने का अह्द किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(17) क्या आज आप ने (प्लास्टिक की नहीं) खजूरी चटाई पर या न होने की सूरत में ज़मीन पर सोते वक़्त सिरहाने (और सफ़र में भी) सुन्नत के मुताबिक़ आईना, सुरमा, कंघा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल की शीशी और कैंची साथ रखी ? नीज़ फ़रागत के बा'द बिस्तर और लिबास तह कर के रखा ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

दूसरा द-रजा 17 म-दनी इन्आमात

(18) क्या आज आप ने फ़ज़्र, ज़ोहर, अस्र और इशा की सुन्नते क़ब्लिया (जमाअत शुरू होने से क़ब्ल) नीज़ फ़र्जों के बा'द वाले नवाफ़िल अदा फ़रमाए ? (नवाफ़िल दसों बयान के बा'द भी पढ़ सकते हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(19) क्या आज आप ने नमाज़े तहज्जुद, इश्राक़ व चाश्त और अव्वाबीन अदा फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(20) क्या आज आप ने कम अज़ कम एक एक बार तहिय्यतुल वुजू और तहिय्यतुल मस्जिद अदा फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(21) क्या आज आप ने कञ्जुल ईमान से कम अज़ कम तीन आयात (मअ तरजमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआदत हासिल की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(22) क्या आज आप ने कम अज़ कम दो इस्लामी भाइयों को इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए म-दनी क़ाफ़िले व म-दनी इन्आमात वग़ैरा की तरगीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(23) क्या आज आप ने दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी कोशिश, दर्से बयान, मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा) पर कम अज़ कम दो घन्टे सर्फ़ किये ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(24) क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशा-व-रतें व दीगर तमाम मजालिस जिस के भी आप मा तहत हैं उन की (शरीअत के दाएरे में रह कर) इताअत फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(25) आज आप ने दूसरों से मांग कर चीजें (म-सलन चादर, फ़ोन, गाड़ी वगैरा) इस्ति'माल तो नहीं कीं ? (दूसरों से सुवाल की आदत निकाल दीजिये, ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास ब हिफ़ाज़त रखें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(26) किसी जिम्मेदार (या आम इस्लामी भाई से) बुराई सादिर हो जाए और इस्लाह की ज़रूरत महसूस हो तो तहरीरी तौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या **مَعَاذَ اللَّهِ** बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज़हार कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठे ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(27) क्या आज आप ने (घर में और बाहर भी) पर्दे में पर्दा किया ? नीज़ बैठने में क़िब्ले की सप्त रुख़ रखने की सअूय फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(28) आज आप ने (घर में या बाहर) किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **गुस्से का इलाज** फ़रमाया या बोल पड़े ? नीज़ **दर गुज़र** से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ ढूँडते रहे ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(29) आज आप ने किसी से ऐसे **फ़ुज़ूल सुवालात** तो नहीं किये जिन के ज़रीए मुसल्मान उमूमन **झूट** के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं ?
(म-सलन बिला ज़रूरत पूछना आप को हमारा खाना पसन्द आया ? वगैरा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(30) आज कहीं आप ने ना मह़रम रिश्तेदारों, ना मह़रम पड़ोसनों नीज़ भाभी से **مَعَاذَ اللَّهِ** बे तकल्लुफ़ हो कर और हंस हंस कर गुफ़्त-गू करने का मन्नुअ काम तो नहीं किया ? क्या इन के सामने आने से कतराए और इन से शर-ई पर्दा किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(31) क्या आज आप (घर में या बाहर) **T.V, V.C.R** या **Internet** वगैरा पर फ़िल्में, डिरामे और गाने बाजे वगैरा देखने या सुनने से बचे ?
नीज़ आंखों की हिफ़ाज़त की आदत बनाने के लिये सोने के अवकाश के इलावा कम अज़ कम **12 मिनट आंखें बन्द रखीं ?**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(32) क्या आज आप ने घर में म-दनी माहोल बनाने के लिये **19 म-दनी फूलों** के मुताबिक़ मुम्किना सूरत में अमल किया ?
(म-दनी फूल रिसाले के आखिर में मुला-हज़ा फ़रमाइये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(33) आज आप ने (घर में और बाहर) किसी पर तोहमत तो नहीं लगाई ?
किसी का नाम तो नहीं बिगाड़ा ? किसी से गाली गलोच तो नहीं की ?
(किसी को सुवर, गधा, चोर, लम्बू, ठिंगू वगैरा न कहा करें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(34) आज आप ने दूसरे की बात इत्मीनान से सुनने के बजाए उस की बात काट कर कहीं अपनी बात तो शुरू नहीं कर दी ? नीज़ बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख़ा हैं ? जी ? या क्या ? बोल कर या अब्रू या चेहरे के इशारे से दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़हमत तो नहीं दी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

तीसरा द-रजा 16 म-दनी इन्आमात

(35) क्या आज आप ने सदाए मदीना लगाई ? (दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में नमाज़े फ़ज़्र के लिये मुसलमानों को जगाना सदाए मदीना लगाना कहलाता है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(36) क्या आज आप ने राह चलते वक़्त और गाड़ी में सफ़र के दौरान आंखों का कुप़्ले मदीना लगाते हुए अक्सर निगाहें नीची रखीं ? नीज़ बिला ज़रूरत (घर में और बाहर भी) इधर उधर देखने साइन बोर्ड वगैरा पर नज़र डालने से बचने की कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(37) क्या आज आप ने अपने घर के बरआमदों से (बिला ज़रूरत) बाहर नीज़ किसी और के दरवाज़ों वगैरा से उन के घरों के अन्दर झांकने से बचने की कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(38) क्या आज आप झूट, ग़ीबत, चुगली, हसद, तकब्बुर और वा 'दा ख़िलाफ़ी से बचने में काम्याब हुए ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(39) क्या आज आप दिन का अक्सर हिस्सा बा वुज़ू रहे ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(40) आज आप ने किसी से बात करते वक़्त अपनी नज़र नीची रखी या मुख़ातब के चेहरे पर गाड़े रहे ? (नीची निगाहों की आदत बनाने के लिये रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट कुफ़ले मदीना का ऐनक इस्ति'माल फ़रमाइये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(41) आज आप ने कर्ज होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तिताअत) कर्ज ख़्वाह की इजाज़त के बिगैर कर्ज की अदाएगी में ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आरियतन (आरिज़ी तौर पर) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुक़रर मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(42) आज आप ने किसी मुसल्मान के उयूब पर मुत्तलअ हो जाने पर उस की पर्दा पोशी फ़रमाई या (बिला मस्लहतें शर-ई) उस का ऐब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिगैर उस की इजाज़त) दूसरे को बता कर ख़ियानत तो नहीं की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(43) आप ने (बिला मस्लहतें शर-ई) किसी एक या चन्द से ज़ाती दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ यक्सां तअल्लुकात रखे हैं ? (ज़ाती दोस्तियां और ग्रूप तन्जीमी कामों की तरक्की में आम तौर पर रुकावट बनते हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(44) क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ के दौरान **खुशूओ खुजूअ** पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ में हाथ उठाने के आदाब का लिहाज़ रखा ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(45) आज आप ने **आजिज़ी** के ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर **निफ़ाक़** और **रियाकारी** का इरतिकाब तो नहीं किया ? म-सलन इस तरह कहना कि मैं हकीर हूँ, कमीना हूँ वगैरा जब कि दिल में खुद को हकीर न समझता हो ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(46) क्या आज आप ने ज़बान का **कुफ़्ले मदीना** लगाते हुए **फुज़ूल** गोई से बचने की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ इशारे से और कम अज़ कम **चार बार लिख कर गुफ़्त-गू** की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(47) क्या आज आप ने तन्हा या **केसिट इज्तिमाअ** में कम अज़ कम एक बयान या म-दनी **मुज़ा-करे** की ऑडियो/वीडियो केसिट बैठ कर सुनी या देखी या म-दनी चैनल पर कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट नशिरयात देखीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(48) क्या आज आप ने (घर में और बाहर) **मज़ाक़ मस्ख़री, तन्ज़, दिल आज़ारी और कहक़हा** लगाने (या'नी खिलखिला कर हंसने) से बचने की कोशिश की ? (याद रखिये किसी मुसलमान का दिल दुखाना कबीरा गुनाह है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(49) क्या आज आप ने ज़रूरी गुफ़्त-गू भी **कम से कम अल्फ़ाज़** में निमटाने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ फुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ौरन नादिम हो कर **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(50) क्या आज आप का सारा दिन (नोकरी या दुकान वगैरा पर नीज़ घर के अन्दर भी) **इमामा शरीफ़** (और तेल लगाने की सूरत में सरबन्द भी) **ज़ुल्फ़ें** (अगर बढ़ती हो तो) एक मुश्त दाढ़ी, सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिंडली तक (सफ़ेद) **कुरता** सामने जेब में नुमायां **मिस्वाक़** और टख़्नों से **ऊंचे पाइंचे** रखने का मा'मूल रहा ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

कुप्ले मदीना कारकर्दगी म-दनी माह व साल.....

क्र.सं.	लिख कर गुप्त-गू	इशारे से गुप्त-गू	निगाहें गाड़े बिगैर गुप्त-गू	कुप्ले मदीना ऐनक का इस्ति 'माल
	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				

श्रुति	लिख कर गुफ्त-गू	इशारे से गुफ्त-गू	निगाहें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू	कुफ़ले मदीना ऐनक का इस्ति 'माल
	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
16				
17				
18				
19				
20				
21				
22				
23				
24				
25				
26				
27				
28				
29				
30				
مجموعی				

हफ़्तावार 8 म-दनी इन्आमात

(51) क्या आप ने इस हफ़्ते इज्तिमाअ में आगाज़ ही से शरीक हो कर (जितना बैठ सकें उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर अक्सर निगाहें नीची किये हर बयान, ज़िक्र व दुआ और खड़े हो कर सलातो सलाम में शिर्कत और मस्जिद में (मअ हल्का, तहज्जुद व नमाज़े फ़ज़्र, इश्राक़, चाश्त) सारी रात ए'तिकाफ़ फ़रमाया ?

(52) क्या आप ने इस हफ़्ते इज्तिमाअ के फ़ौरन बा'द खुद आगे बढ़ कर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नए नए इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल कर के उन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर हासिल किया ? (कम अज़ कम चार से मुलाक़ात और कम अज़ कम एक का पता वग़ैरा ज़रूर लीजिये फिर उन से राबिता भी रखिये)

(53) क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक मरीज़ या दुखियारे के घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुताबिक़ ग़म ख़्वारी की ? और उस को तोहफ़ा (ख़्वाह मक-त-बतुल मदीना का शाएअ कर्दा रिसाला या पेम्फ़लेट) पेश करने के साथ साथ ता'वीज़ाते अत्तारिख़्या के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

(54) क्या आप ने इस हफ्ते कम अज़ कम एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत फ़रमाई ?

(55) क्या आप ने इस हफ्ते कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को (जो पहले म-दनी माहोल में थे मगर अब नहीं आते) तलाश कर के उन को म-दनी माहोल से वाबस्ता करने की कोशिश की ? (मगर जिस पर तन्जीमी पाबन्दी हो उसे न छेड़ें)

(56) क्या आप ने इस हफ्ते अ़लाक़ाई मस्जिद इज्तिमाअ में कम अज़ कम एक नए इस्लामी भाई को साथ ले जा कर अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाई ?

(57) क्या आप ने इस हफ्ते कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को मक्तूब रवाना फ़रमाया ? (मक्तूब में म-दनी क़ाफ़िले और म-दनी इन्आमात वग़ैरा की तरगीब दिलाइये)

(58) क्या आप ने इस हफ्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का रोज़ा रखा ? नीज़ इस हफ्ते कम अज़ कम एक दिन खाने में जव शरीफ़ की रोटी तनावुल फ़रमाई ?

माहाना 6 म-दनी इन्आमात

(59) क्या आप ने साबिका म-दनी माह का म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के अपने जैली निगरान को जम्अ करवा दिया ?

(60) इस माह की पहली पीर शरीफ़ को रिसाला “ख़ामोश शहज़ादा” का मुता-लआ फ़रमा कर फ़ुज़ूल गोई से बचने की आदत बनाने के लिये 25 घन्टे का कुफ़ले मदीना लगाया ? नीज़ क्या आप ने इस माह जद्वल के मुताबिक़ कम अज़ कम तीन दिन के म-दनी काफ़िले में सफ़र किया ?

(61) क्या इस माह आप की इन्फ़रादी कोशिश से कम अज़ कम एक इस्लामी भाई ने म-दनी काफ़िले में सफ़र किया ? और कम अज़ एक ने म-दनी इन्आमात का रिसाला जम्अ करवाया ?

(62) क्या आप ने इस माह किसी सुन्नी अ़लिम (या इमामे मस्जिद, मुअज्जिन, खादिम) को 112 रुपै या कम अज़ कम 12 रुपै तोहफ़तन पेश किये ? (ना बालिग़ अपनी जाती रक़म नहीं दे सकता)

(63) क्या आप ने बालिग़, ना बालिग़ व ना बालिगा के जनाजे की दुआएं, 6 कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल, तक्बीरे तशरीक़ और तल्बिया (या'नी लब्बैक) येह सब तरजमे के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ को (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये ?

(64) क्या आप ने अज़ान और इस के बा'द की दुआ कुरआन शरीफ़ की आख़िरी दस सूरतें, दुआए कुनूत, अत्तहिध्यात, दुरूदे इब्राहीम और कोई एक दुआए मासूरा येह सब मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ को (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये हैं ?

सालाना 8 म-दनी इन्आमात

(65) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के) तमाम म-दनी रसाइल (जो आप को मा'लूम हैं) पढ़ या सुन लिये हैं ?

(66) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ तमाम म-दनी फूल के पेम्फ़लेट (जो आप को मा'लूम हैं) पढ़ या सुन लिये हैं ?

(67) क्या आप ने इस साल जद्वल के मुताबिक़ एक मुश्त 30 दिन के म-दनी काफ़िले में सफ़र फ़रमाया ? (अगर एक मुश्त 12 माह के म-दनी काफ़िले में सफ़र नहीं किया तो ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार सफ़र की निय्यत फ़रमा लीजिये)

(68) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक बार इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي की आख़िरी तस्नीफ़ मिन्हाजुल अ़बिदीन से तौबा, इख़्लास, तक्वा, ख़ौफ़ो रजा, उज़्ब व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की हिफ़ाज़त का बयान पढ़ या सुन लिया ?

(69) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा बहारे शरीअत हिस्सा 9 से मुरतद का बयान, हिस्सा 16 से ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के हुकूक का बयान, (अगर शादी शुदा हैं तो) हिस्सा 7 से महूरमात का बयान और हुकूकुज़्ज़ौजैन हिस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, जिहार का बयान और त़लाके किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया ?

(70) क्या आप ने मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कम अज़ कम एक बार कुरआने पाक नाज़िरा ख़त्म कर लिया है ? और इसे इस साल दोहरा लिया ?

(71) क्या आप ने आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوْتَ की कुतुब तम्हीदुल ईमान व हुसामुल ह-रमैन नीज़ मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताबें कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब और चन्दे के बारे में सुवाल जवाब पढ़ या सुन ली हैं ?

(72) क्या आप ने बहारे शरीअत या नमाज़ के अहक़ाम से पढ़ या सुन कर अपने वुज़ू, गुस्ल और नमाज़ दुरुस्त कर के किसी सुन्नी अ़लिम या जिम्मेदार मुबल्लिग़ को सुना दिये हैं ?

रिज़ाए रब्बुल अनाम के काम

अत्तार का दोस्त : अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** फ़रमाते हैं : जो ज़ैल में दिये गए 12 म-दनी इन्आमात की पाबन्दी करे वोह मेरा दोस्त है ।

मदीना 1 : (दीगर फ़राइज़ व वाजिबात पर अमल के साथ साथ) रोज़ाना पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा करे नीज़ हर बार कम अज़ कम एक को अपने साथ मस्जिद में ले जाने की कोशिश करे ।

मदीना 2 : रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम 2 दर्स (मस्जिद, घर, दुकान वगैरा जहां सहूलत हो) दे या सुने । (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

मदीना 3 : रोज़ाना मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ने पढ़ाने के साथ मस्जिदे महल्ला की इशा की जमाअत के वक़्त से दो घन्टे के अन्दर घर पहुंच जाए ।

मदीना 4 : रोज़ाना कम अज़ कम दो इस्लामी भाइयों को इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए म-दनी काफ़िला व म-दनी इन्आमात और दीगर म-दनी कामों की तरगीब दिलाए ।

मदीना 5 : दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी कोशिश, दर्सों बयान, म-दनी मश्वरा वगैरा) में रोज़ाना कम अज़ कम दो घन्टे सर्फ़ करे ।

मदीना 6 : रोज़ाना सदाए मदीना की तरकीब करे ।

मदीना 7 : हफ़्तावार इज्तिमाअ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत मअ रात

ए'तिकाफ़ व फ़ज़्र व इश्राक़ व चाश्त ।

मदीना 8 : हफ़्ते में कम अज़ एक दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करे । (तिजारती मराकिज़ में बरोज़ बुध ज़ोहर से क़ब्ल और रिहाइशी अ़लाकों में यौमे ता'तील अ़स्र ता मग़रिब)

मदीना 9 : हफ़्ते में कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को (जो पहले म-दनी माहोल में थे मगर अब नहीं आते) तलाश कर के उन को म-दनी माहोल से वाबस्ता करने की कोशिश करे (यहां वोह मुराद नहीं जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी लगी हो)

मदीना 10 : रोज़ाना कम अज़ कम एक बयान या म-दनी मुज़ा-करे की केसिट सुने या म-दनी चेनल पर कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट नशिरयात देखे । (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ इस से बे इन्तिहा खुश होते हैं)

मदीना 11 : रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के दौरान म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली जुमा'रात म-दनी इन्आमात के मक्तब में जम्अ करवा दे ।

मदीना 12 : हर माह कम अज़ कम 3 दिन जद्वल के मुताबिक़ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करे । ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह और हर 12 माह में 30 दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत हो । (दा'वते इस्लामी के जामिआत के त-लबा मजलिस के दिये हुए जद्वल के मुताबिक़ सफ़र करें)

अत्तार का प्यारा : अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ) फ़रमाते हैं : जो मज़कूरा म-दनी इन्आमात पर अमल के साथ 72 में से कम अज़ कम 63 और जामिआतुल मदीना और मद्र-सतुल मदीना का तालिबे इल्म 92 में से कम अज़ कम 82 म-दनी इन्आमात का आमिल हो वोह मेरा प्यारा है ।

अत्तार का मन्ज़ूरे नज़र : अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ) का इर्शाद है, जो मुन्दरिजए बाला मा'मूलात बजा ला कर दोस्त और प्यारा बनने के साथ साथ ज़ैल में दिये हुए 5 म-दनी काम पाबन्दी से करे वोह मेरा “मन्ज़ूरे नज़र” है ।

मदीना 1 : रोज़ाना कम अज़ कम 12 बार लिख कर गुफ़्त-गू ।

मदीना 2 : रोज़ाना कम अज़ कम 12 बार इशारे से गुफ़्त-गू ।

मदीना 3 : रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट कुफ़ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल ।

मदीना 4 : (ज़रूरी गुफ़्त-गू की नौबत आती हो तो) रोज़ाना कम अज़ कम 12 बार सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाड़े बिग़ैर गुफ़्त-गू ।

मदीना 5 : हफ़्ते में कम अज़ कम एक रिसाला पढ़े । (जो रोज़ाना कम अज़ कम एक रिसाला पढ़ने का मा'मूल बनाए उस से अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ) बहुत खुश होते हैं)

महबूबे अत्तार : अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ) का फ़रमाने शफ़क़त निशान है कि जो मुन्दरिजए बाला तमाम मा'मूलात

के साथ साथ मुकम्मल 72 और मज़कूरा तालिबे इल्म मुकम्मल 92 म-दनी इन्आमात का आमिल हो वोह मेरा “महबूब” है।

जज़्बाते अत्तार : आह ! आह ! आह ! दिल खौफ़ज़दा है मैं नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मेरे बारे में खुफ़या तदबीर क्या है ! अलबत्ता मेरे दिल के जज़्बात येह हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके में मुझ पर अगर खास करम हो गया तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** عَزَّوَجَلَّ अपने हर दोस्त, प्यारे, मन्ज़ूरे नज़र और महबूब को जन्नतुल फिरदौस में साथ लेता जाऊंगा।

अत्तार किस से बेज़ार : जो इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा, इन्तिज़ामी काबीनात व मजालिस वगैरा की बिला इजाज़ते शर-ई लोगों के सामने मुख़ा-लफ़त करे वोह न मेरा दोस्त, न प्यारा, न मन्ज़ूरे नज़र और न महबूब बल्कि क़ल्बे अत्तार उस से बेज़ार है।

दुआए अत्तार : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो रोज़ाना येह मज़कूरा म-दनी काम कर लिया करे उस अत्तार के दोस्त और प्यारे नीज़ अत्तार के मन्ज़ूरे नज़र व महबूब को मअ अत्तार जन्नतुल फिरदौस में अपने म-दनी महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोसी बना ले।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

“या रब्बे करीम ! हमें मुत्तकी बना” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में “म-दनी माहोल” बनाने के 19 म-दनी फूल

(1) घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये । (2) वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता'जीमन खड़े हो जाइये । (3) दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाउं चूमा करें । (4) वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये । (5) इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये । (6) सन्जी-दगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहसें करते रहने की अगर आप की आदतें हों तो अपना रवय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लीजिये । (7) घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी । (8) मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुखातिब हों । (9) अपने महल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज़्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) **मुयस्सर** आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो । (10) घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो और आप अगर सर-परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की

नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए, सब को नरमी के साथ मक-त-बतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ओडियो/वीडियो केसिटे सुनाइये। म-दनी चेनल दिखाइये।
 (11) घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब, सब और सब कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो “म-दनी माहोल” बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मजीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख्ती करने से बसा अवकात शैतान लोगों को जिद्दी बना देता है। (12) म-दनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये। (13) अपने घर वालों की दुन्या व आखिरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :
 “الدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ” या’नी दुआ मोमिन का हथियार है।”
 (14) सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए शर-ई न हो। (15) मसाइलुल कुरआन सफ़हा 290 पर है : हर नमाज़ के बा’द येह दुआ अव्वल व आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल काइम होगा। (दुआ येह है :)
 (اللّٰهُمَّ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝)
 (1) “اللّٰهُمَّ” आयते कुरआनी का हिस्सा नहीं¹

1 : तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना। (الفقران १: १९)

कारकदर्दगी बराए रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّ وَجَلَّ के काम

- (1) इस माह के अक्सर दिनों में मज़कूरा म-दनी इन्आमात पर अमल की कोशिश रही ? ☐
- (2) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मर्तबा लिख कर गुफ्त-गू फ़रमाई ? ☐
- (3) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मर्तबा इशारे से गुफ्त-गू फ़रमाई ? ☐
- (4) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मर्तबा चेहरे पर निगाहें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू की कोशिश फ़रमाई । ☐
- (5) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मिनट कुफ़ले मदीना का ऐनक इस्ति'माल फ़रमाया ? ☐
- (6) इस माह आप ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के कितने रसाइल का मुता-लआ फ़रमाया ? ☐
- पहला हफ़्ता ☐ तीसरा हफ़्ता ☐ कुल ता'दाद ☐
- दूसरा हफ़्ता ☐ चौथा हफ़्ता ☐
- (7) इस माह 72 म-दनी इन्आमात में से कितने पर अमल की कोशिश रही ? ☐
- (8) इस माह कितने दिन फ़िक्रे मदीना की सअदत हासिल की ? ☐
- (9) इस माह कितने दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सअदत हासिल की ? ☐
- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ इस माह अत्तार का दोस्त ☐ अत्तार का प्यारा ☐ अत्तार का मन्ज़ूरे नज़र ☐ महबूबे अत्तार ☐ बनने की सअदत हासिल हुई । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ आयन्दा माह कम अज़ कम ☐ म-दनी इन्आमात पर अमल की कोशिश करूंगा ।

अमल करने का आसान तरीका

रिसाले में हर म-दनी इन्आम के नीचे 30 दिनों के खाने दिये गए हैं। रोज़ाना वक़्ते मुकर्ररा पर फ़िक्रे मदीना (या'नी मुहा-सबे के दौरान खाने पुर करने का सिल्लिसला) कीजिये जिन म-दनी इन्आमात पर अमल की सआदत मिली, नीचे खाने में (<) का निशान वरना (○) बना दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** ब तदरीज अमल में इजाफ़े के साथ साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत पाएंगे।

हदीसे पाक में है : (आख़िरत के मुआ-मले में) घड़ी भर ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है।

(الجامع الصغير للسيوطي، الحديث 5897 ص 365 دار الكتب العلمية بيروت)

दुआए अत्तार : या अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ! जो हर माह तेरी रिज़ा के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल कर के रोज़ाना इस रिसाले में दिये गए खाने पुर कर के अपने जैली मुशा-वरत के निगरान को जम्अ करवाए तू उस के अमल में इस्तिक़्ामत अता फ़रमा कर उस को अपना मक्बूल बन्दा बना ले।

म-दनी माह..... 14 सि.हि.

नाम मअ वल्लिदयत..... उम्र तक़रीबन.....

मुकम्मल पता.....

जैली हल्का..... हल्का..... अलाका/शहर.....

आप ने **फ़िक्रे मदीना** (या'नी मुहा-सबे के दौरान खाना पुरी करने) के लिये

कौन सा **वक़्त** मुकर्रर फ़रमाया है ?.....

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

مکتبۃ الدین

Mo.091 93271 68200

E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net